टिप्पणी

5

जाति स्वर और स्वर जति

स्वर जति अभ्यास गान और सभा गान दोनों से संबंधित एक संगीत विधा है। यद्यपि अभ्यास गान में प्रयुक्त होने वाली स्वर जतियां बहुत सरल होती हैं, श्यामा शास्त्री और पोनिया पिल्लै द्वारा रचित उच्च स्तरीय स्वर जतियां एक वरिष्ठ संगीतज्ञ के लिये भी कठिन हैं। इस संगीत विधा में पल्लवी, अनुपल्लवी और चरण जैसे विभाग हैं। कई स्वर जतियों में अनेक चरण होते हैं जिनमें साहित्य के पश्चात उसके स्वर लिये जाते हैं। जहां बिलहरी और खमास की स्वर जतियां आरंभिक विद्यार्थी को राग का अनुमान देती हैं, वहीं श्यामा शास्त्री द्वारा रचित भैरवी, यदुकुल कांबोजी और तोड़ी की स्वर जतियां उन रागों का उत्कृष्ठतम उदाहरण हैं।

जाति स्वरं अभ्यास गान से संबंधित एक संगीत विधा है। इसे गीतों के पश्चात् सिखाया जाता है। जैसा कि नाम से ज्ञात होता है, जाति स्वरं में केवल स्वर समुदाय होते हैं, साहित्य नहीं। रचना में पल्लवी और कई चरण होते हैं। क्योंकि इनमें केवल स्वर होते हैं, इन्हें स्वर पल्लवी भी कहते हैं। जाति स्वरं सामान्यतया भरत्नाट्यं सभाओं में प्रस्तुत होते हैं। नर्तक द्वारा जाति अनुच्छेद से प्रस्तुति का आरंभ होता है, जिसके पश्चात रचना प्रस्तुत होती है।

उद्देश्य

इस पाठ के अभ्यास के पश्चात, विद्यार्थी

- स्वर स्थान पूर्णतया बता पायेगा
- पल्लवी, अनुपल्लवी और चरणं के नमूने लिख पायेगा
- विभिन्न लय प्रतिरूपों का ज्ञान बढ़ा पायेगा
- जातिस्वर विधा को परिभाषित कर पायेगा

5.1 रागलक्षणं

5.1.1 रागं शंकराभरणं

29वां मेल

72 मेलकर्ता प्रणाली में धीर शंकराभरण

आरोहनं– स $रि_2$ $ग_2$ $म_1$ प $ध_2$ $नि_2$ सं

अवरोहनं– सं $नि_2$ $ध_2$ प $म_1$ $ग_2$ $रि_2$ स

संचारं

ग म प ध, प,	ग, म प ग रि, स,	स,, निछ स रि, स,	रि स, नि ध नि, स,
स रि ग, म ग	रि ग, स, स रि ग	म ग,,,	म ग, म, य ; प,
प, प ध, नि, प,	ध, नि, , सं,,,	सं रिं गं रिं गं, ,,	गं, मं पं गं रिं, सं, , नि
ग रि स नि ध, प,	– प रि, ग,	ग, म प ग रि, स,	

रागं: शंकराभरणं तालं: रूपकं

पल्लवी

x		x		v		x		x		v	
सं	;	सं	रि	सं	नि	ध	प	;	म	ग	म
x		x		v		x		x		v	
प	;	;	सं	ध	प	म	ग	रि	गम	प	धनि

चरण

1.

x		x		v		x		x		v	
प	;	;	ध प	म	प म	ग म ग		रि ग रि		स	सनि
x		x		v		x		x		v	
स	;	;	स नि	स,	गरि	ग	मग	म	प म प ध नि		

2.

x		x		v		x		x		v	
म	;	य		प म ग स रि ग		म	;	;	प ध प प म ग		
x		x		v		x		x		v	
म	;	;	प सं नि		धप	म ; ;		ग रि ग स रि ग			
x		x		v		x		x		v	
म, ग		स रि स म ग स प प				म ग		ध प प म ग म प ध नि			

3. ‖ x   x   v   ‖ x   x   v ‖
‖ सं, ;   ; रिं सं नि   सं नि ध ‖ नि ध प ध प म प म ग म ग रि ‖

‖ x x   v   ‖   x   x   v ‖
‖ स ; ; स नि़ रि स ग रि ‖ म ग प म ध प नि ध सं नि रिं नि ‖

‖ x   x   v   ‖ x   x   v ‖
‖ सं; ;   ; ;   निध निसं ‖ निय ;   ; ;   ध प म ध ‖

‖ x   x   v   x   ‖ x   x   v ‖
‖ प ;   ; ;   म   ग   रि   ग ‖ स   ; ; रि ग   मपध नि ‖

‖ x   x   v   ‖ x   x   v ‖
‖ संसं पप स स स प ‖ प सं   नि ध प म ग   म प ध नि ‖

5.1.2 रागलक्षणं

रागं खमास

28वें मेल हरिकांबोजी जन्य

आरोहनं- स $म_1$ $ग_2$ $म_1$ प $ध_2$ $नि_1$ सं
अवरोहनं- सं $नि_1$ $ध_2$ प $म_1$ $ग_2$ $रि_2$ स

जातिः वक्र षाडव संपूर्ण

भाषांग रागः अन्य स्वर काकली निषादं

वादीः मध्यमं

संवादीः निषादं

संचारं

ग म नि ध ; ,-   ध नि सं ध नि प, - -   ध नि सं नि सं, , , -
ध नि सं गं रिं   मं गं रिं, संय-   नि सं नि सं रिं नि - नि, नि
नि ध प   प रिं सं सं, नि ध प   म ग म; , ,
म ग ग रि,   सय ; , -

पल्लवी

संबा शिवायनवे रजितगिरि
संभावी मनोहर परतपर कृपाकर श्री

चरणं

1. नीवगुरु देवंबुनी येवलनु सेविंपुसु सदा मदिनिसिवा
2. परम दयानिधि वनुचु
   मरुवकनहृदयमना
   महादेव महाप्रभो सुंदर नायक
   सुरवर दायक भाव भय हरशिव
3. स्थिर मधुर पुरमुन
   वरमुलो सगुहरनि निरतमुनदलची
4. श्री शुभाकर शशि मकुटधर
   जय विजय त्रिपुराहर
   श्रीतजन लोलतभूतगुन शील
   कतनुत भालपतितुनी लोल
   मुदम बल रंग पदब्ज मुलंदु
   पदमबलजरचु पसुपतिनी
   ज्ञानमु ध्यानमु स्नानमु पानमु
   दानमु मानमु अभिमा न मानुचु
   कनिकर मुनचरणम बलकुनु
   कोनुश्रुतु लनुदलसरनु नच्चु
5. सरस रेकुनि नममंतरम
   कोरिननु नीपदब्ज मंत्रम
   दासदौ चिन्नी कृषनुनिकीदिकुनि
   वेयनि चोक्कनिदुनि नम्मुकोनि

5.2 स्वर जति

रागं: खमास   तालं: आदि

पल्लवी

x					1		2		3		
सं̇	;	;	,	–̇	स	नि	ध	प	,	म	ग
सं̇						बा	शि	वा	–	य	न
x					v			x		v	

|| म ; ; ग म प ध न |
|| वी - - रा जी था गी. तपी |

| x 1 2 | 3 ||
| सं, , रं नं, , सं ध, | , न प, , द ||

|| सा - - मबहा वी - - मा नो – हा रा – पा |
|| x v x v |

| म , , प म, , ग म, |, प ध, , न ||
| रा - - थपा रा करू पा | - - का रा - - श्री || (सम)

चरणं -1

|| x 1 2 3 |
|| सं, रं, सं न न, सं, न ध ध, न, |

नी – वे गुरू डाई वाम बनी ये – ये

|| x v | x v ||
|| डीपीम, ड, मग | सम, ग मपडीन ||

लानू से वीम – पुसु साधा-मा धीनीसीवा

(सम)

चरणं -2

|| x 1 2 3 |
|| सं रं सं न सं ; नसं नडी न ; |

पा रा मा डे अ - - - निधि वेन यू चू - - -

|| x v | x v ||
|| ध न ध प ध , , |, प प ध प मप ; ||

मा रू वा का ना - - - हरीधायामू ना - - -

|| x 1 2 3 ||
|| स सं सं सं म म मं म प प प प ध ध ध ध ||

महा देवा महाप्रभू सुन्भ्रा ना – या का

|| x v x v ||
|| न सं न सं न, ध पं ध प म ग म प ध न ||

सु रा वा रा दा – या का भावाभाया हारासीवा (साम)

चरणं -3

x				1				2			3			
ध	सं	नि	ध	प	म	ग	म	प	,	;	प	ध	नि	ध
स्थिरमधु			रपु		रमु		न	–	–	–	वरमुलो			

x				v	x			v					
प	म	ग	ग	म,	य	म	निं	ध	नि	ध	प	ध	नि
स	गु	ह	र	नि	– – –		नि	रत	मुन	दलची			

चरणं -4

x				1		2				3			|	
सं	,	;	;	स	नं	न	ध	ध	प	प	म	ग	|	ग
श्री		-	-	–	शुभा	का	रा	सा	सी	मा	कु	टाड		हा

x			v			|	x				v		
म	,	;	;	पं	ध	|	न	ध	म	ग	म	प	ध	न
रा	-	-	-	जया			विजयात्री				पुराहारा		

x				1		|	2				3	
सं	मं	गं	सं	सं,	सं,	|	सं	रं	सं	सं	न,	न,
सरिता जा		ना	लू	ला	था		भू	था	गाना	सी	ला	

x				v		|	x				v	
न	स	न	धं	ध,	धं,	|	प	ध	प	म	प,	प,
करुता		नाथा		भा	–		ला	पातीयूनी		लू	ला	

x				1		|		2			3	
स	म		मं	ग	पं,	|	प	म	ध,	ध	प न,	न
मू	धाम- बा			लरन-गा			पाधा-बजा			मुलान-धू		

x			v			|	x				v	
धं	रं,	रं	नं	सं,	सं	|	न	सं	न	ध	प ;	
पदम-		बू	लूजर	-			चू	पसू	पति	नि	- -	

x				1		|		2			3	
म	,	प	म	प,	ध	|	प	ध,	न	ध	न, सं न	
गना-		नामू		धया	नामू		सनया-नामू		पा-नामू			

|| x v | x v
सं, रं सं रं, सं न | सं रं सं, नं ध प म ||
धा - नामू मा - नामू अभीमा–नामानुसु

| x 1 | 2 3
ग म प ध न सं | न रां सं ; सं रं न सं |
कानीकारा मुनाचारा नाम बू लू का नू

|| x v x | v
ध न प ध म ; ध | प म ग म प ध न ||
कोनू श्रयू थू लेन - - - नू थू लाचा रानानुसु (साम)

चरणं-5 खानदागती

|| x 1 | 2 3
सं , रं सं, न , ध | न, सं , न ध, प ; ||
सा-रा सा रि-कुनी ना मा मन तराम - - -

| x v | x v
प , ध न, ध , प म, | प, म ग, म ; |
को-रिना नू-निपा धा भजमन ट्राम—

|| x 1 | 2 3
म , ग म, प , म प, | ध , प ध, न, ध न, ||
धा सू डूव ची नी क्रिस शा नू नि कि धी कू नि

| x v | x v
सं , रं सं, न , ध न, | सं , न ध, म , प ध, |
वे- ये नि शोक – काना डू निनाम मु-कोनी (शाम)

पाठगत प्रश्न

1. 72 मेलकर्ता प्रणाली में शंकराभरणं के पहले क्या उपसर्ग जोड़ा गया है?
2. खमास स्वर जति के अंतिम चरणं की कौन सी गति में रचना की गयी है?
3. राग खमास कौन से मेल की जन्य राग है?

टिप्पणी

निर्देशित कार्य कलाप

1. अभ्यास गान और सभा गान की स्वर जति में अंतर का विशलेषण करने का प्रयास करें।

2. विभिन्न जाति स्वरं एकत्र करने का प्रयास करें।